संग्री वि०/रोहतक/37-87/12631.—चू कि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं दी रोहतक आशोका थियेंटर, प्रा० लिं०, रोहतक, (2) आरं० अरं० इंटरप्राईजिज, लिसी माफंत भारत ट्रेक्टरस, पुराना किला रोड़, रोहतक के श्रमिक श्री सुनील कुमार दुआ, बी-6, मकान नं० 212, प्रताप मुहल्ला, रोहतक तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई औद्योगिक विवाद है;

मोर चू कि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना वाछनीय समझते है;

इसलिए, ग्रब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप-धारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-1-श्रम/78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय रोहतक को विवाद- ग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय, एवं पूंचाड़ तीन मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते ह जो कि उक्त प्रबन्धको तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है:—

क्या श्री सुनील कुमार दुआ की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सक भोविव /रोहतक /40-87/12639.—चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं में मैंकेनिकल मूवमेंन्ट प्राव्य लिंक, इण्डिस्ट्रीयल ऐरिया, बहादुरगढ़ (राहतक) के श्रीमक श्री द्यानन्द, पुत्र श्री लाला राम, 1/299, इन्ह्ररा पार्क, भपोव रेलवे स्टेशन, बहादुरगढ़ रोहतक तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामने में कोई भौद्योगिक विवाद है;

मोर चूकि इरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, भव, भौद्योगिक विवाद भिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिन्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सर्व 9641-1 अम-78/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिनियम की धारा 7 के धधीन गठित अम न्यायालय, रोहतक को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हुँतु निर्दिष्ट करते हुँ जो कि उन्त प्रबन्धकों तथा अधिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उन्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री दयानन्द की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं गैर-ह्याजिर हो कर नौकरी से लियन खोया है इस बिन्दु पर निर्णय के फल स्वरूप वह किस राहत का हकदार है ?

सं. मो. वि./पानी/26-87/12648--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० पचरंगा इन्टरनेशनल, पचरंगा बाजार, पानीपत के श्रामक श्रा जगदोश प्रसाद, पुत श्रो ननक प्रसाद माफंत इन्जीनियरिंग एण्ड टेक्सटाईल वर्करज यूनियन (रिजि०), भगत सिहंस्मारक, पानीपत तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इस में इस के बाद सिखित मामले में कोई मौद्योगिक विवाद है;

मार चूकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायानणय हेतु निदिष्ट करना वाष्ट्रनाय समझते है;

वया श्री जगदीश प्रसाद की सेवामों का समापन त्यापोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राइत का हकदार है ? मो. वि. /पानीपत/ 24-87/ 12655—चूंकि हरियाणा के राज्यशाल को राय है कि मै० शाहकुम्भराह फिनिशिप वर्कस दस राज कालोना, पानोपत, के श्रामक श्रा निशाकान्त मार्फत टैं≉सटाईल मजदूर संघ, जी. टी. रोड़, पानापत तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसनें इसने वाद लिखित मामले में कोई घौड़ोगिक दिवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना बांछनीय समझते हैं ; इसलिए, श्रव, श्राचागिक विवाद श्रीधानयम, 1947 की श्रारा 10 की उपश्रारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा श्रदान की गई श्रारा उसत श्रीधानयम कर श्रीरा 7 के श्रीमान गठित भग व्यापालय, ध्रम्याला का विवादग्रस्त था उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला व्यापानिर्णय एवं पचाट तीन मास में देन हेतु निर्विष्ट करते हे जो कि उनत् अपन्यको तथा अभिक के बीच या ता विवादशस्त मामला है या विवाद से मुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है या विवाद से मुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री निशा कान्त की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं गैर-संजिर हो कर नौकरी से पुनर्महणाधिकार (लियन) खोया है, इस विद्यु पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राह्य का हक्तरार है ?